(2) उत्पादन विस्तार — मुद्रा स्फीति को रोकने का एक प्रभावशाली उपाय देश में वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि करना है लेकिन स्फीति-काल में उत्पादन में वृद्धि करना कठिन काम है क्योंकि इस समय उत्पादक के सभी साधन पूरी तरह से कार्यरत रहते हैं इस सम्बन्ध में यह सुझाव आता है कि उत्पादन के साधन का पुनः वितरण इस प्रकार किया जाय कि उन वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि हो जिन पर स्फीतिक दबाव का भार अधिक है। इसके अतिरिक्त सरकार को उदार आयात नीति अपनानी चाहिए।

(3) मजदूरी समंजन नीति — कुछ विचारकों के अनुसार मजदूरी समंजन नीति आर्थिक स्थिरीकरण का एक महत्वपूर्ण उपकरण है इस नीति के अनुसार अवसाद या मन्दी के समय में मजदूरी में कटौती कर देनी चाहिए ताकि व्यापारियों को अतिरिक्त विनियोग बढ़ाने में प्रोत्साहन मिले और स्फीति के दिनों में मजदूरी को नियंत्रित रखना चाहिए ताकि कीमतों में और अधिक वृद्धि न होने पाए। इस प्रकार मजदूरी सामंजस्य नीति का सार यह है कि व्यापार चक्रों से अलग अलग पहलुओं में अलग अलग मजदूरी नीति अपनानी चाहिए परन्तु यह बहुत ही कठिन कार्य है

पूर्ण रोजगार के लिए अपनायी गई मजदूरी नीति को मजदूरी की दोहरी प्रकृति का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। यह उत्पादकों के लिए लागत व मजदूरों के लिए आय होती है। यह कहना अधिक उचित होगा कि मजदूरी को उत्पादकता के साथ सम्बन्धित कर देना चाहिए।

(4) स्वनिर्मित स्थिरकर्ता — इससे आशय व्यापार चक्र की तेजी या मन्दी द्वारा उत्पन्न की गई उन शक्तियों से है जो अपनी जन्मदाता प्रवृति का ही विरोध करती है। स्वनिर्मित स्थिरकर्ता तीन प्रकार के होते हैं।
(i) मौद्रिक स्थिरकर्ता (ii) राजकोषीय स्थिरकर्ता (iii) प्रावैगिक निर्धारक

(i) मौद्रिक स्थिरकर्ता — मंदी काल में लाभ कम होने से विनियोग घट जाता है, बैंकों से लिए जाने वाले ऋण कम हो जाते हैं। और बैंकों के पास अत्यधिक नकदी जमा हो जाती है। अर्थात इस प्रकार क्रम चलता है — भावी लाभ में कमी → विनियोग में कमी → बैंकों के ऋणों में कमी → बैंकों के पास नकदी में वृद्धि। ऐसी हालत में बैंक ब्याज दर कम कर देती हैं और ऋण सम्बन्धी शर्तें ढ़ीली कर देते हैं फलतः ऋण अधिक आकर्षक हो जाता है और विनियोक्ता अधिक ऋण की माँग करने लगते हैं

(ii) राजकोषीय स्थिरकर्ता — इसमें करों और व्ययों का प्रयोग इस प्रकार से होता है कि वे अस्थिरीकरण को दूर करने के लिए स्वतः ही ठीक दिशा में कार्य करते हैं। दूसरे शब्दों में तेजी स्वयं ऐसी प्रवृतियां उत्पन्न करती है जो इसकी रोकथाम करती है और

अन्ततः इसे समाप्त कर देती है। यही बात मन्दी के बारे में सही है
आयकर तथा व्यय-कर और बेकारी बीमा वृद्धावस्था बीमा योजनाएं पेंशन आदि तथा अन्य सामाजिक सुरक्षा के उपाय ऐसे कदम हैं जो आय एवं व्यय को सन्तुलन और लोच प्रदान करते हैं।
(3) प्रावैगिक निर्धारक — सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन, लाभ के पक्ष या विरुद्ध आय का स्थानान्तरण तथा पूंजी उत्पाद अनुपात में परिवर्तन। इन तीन प्रकार के परिवर्तनों की जननी स्वयं तेजी या मंदी है। तेजी ऐसे ताकत को जन्म देती है जो इसे समाप्त कर देती है और यही बात मन्दी के लिए भी सही है।
मंदी की अवधि में सम्भव है कि आदतों की बेलोचता के कारण आय गिरने पर परिवार अपना उपभोग व्यय कम न करे अथवा जिस अनुपात में आय में कमी आती है उसी अनुपात में उपभोग में कमी नहीं आती है चूंकि उपभोग व्यय घटती हुई दर से घटता है इसलिए, त्वरक क्रियाशील हो जाता है और विनियोग में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त चूंकि कुछ समय के लिए विनियोग स्थगित कर दिये जाते हैं इसलिए नये आविष्कार तथा नवप्रवर्तन जमा हो जाते हैं विनियोग में वृद्धि होती है। गुणक एवं त्वरक दोनों ही क्रियाशील हो जाते हैं और अर्थव्यवस्था पुनरुद्धार की ओर अग्रसर होने लगती है
स्वनिर्मित स्थिरकर्ता पर पूरी तरह से निर्भरता उचित नहीं है क्योंकि राजकोषीय स्थिरकर्ता इतने क्षीण होते हैं कि वे घटनाओं की दिशा बदलने में सशक्त नहीं होते तथा मौद्रिक स्थिरकर्ता तथा प्रावैगिक निर्धारक विलम्ब से प्रभावी होते हैं।
व्यापार चक्र के सम्बन्ध में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि व्यापार चक्र एक जटिल समस्या है। कोई भी एक नीति अकेले उन पर प्रभावपूर्ण रोक या नियन्त्रण नहीं लगा सकती है वास्तव में मौद्रिक नीति, राजकोषीय नीति तथा स्वचालित स्थानीय कारकों के उचित विवेकपूर्ण नियन्त्रण की आवश्यकता है।

X

Scanned with CamScanner